

बी.एच.डी.सी.-133 / आधुनिक हिंदी कविता / बीएजी

स्नातक उपाधि कार्यक्रम (सी.बी.सी.एस.)
(BAG)

सत्रीय कार्य
(जुलाई, 2023 तथा जनवरी, 2024 सत्र के तीसरे सेमेस्टर के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी-133
आधुनिक हिंदी कविता



मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.-133 / बीएजी

प्रिय छात्र/छात्राओ!

'आधुनिक हिंदी कविता' पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किये गये हैं। उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानी पूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख कीजिए।
4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक :

नाम :

पता :

.....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :

सत्रीय कार्य कोड :

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :

दिनांक :

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का इस्तेमाल करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :
जुलाई 2023 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2024
जनवरी 2024 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर, 2024

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

सत्रीय कार्य के तीन खंड हैं और उसमें तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें

1. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

2. **विशेष** : अपने उत्तर की फोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य
(संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.-133 / बीएजी
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी.-133 / 2023-2024
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड – क

निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिये :

10× 4=40

1. प्रेम में मीन मेष कछू नाहिं।
अति ही सरल पंथ यह सूधो छल नहिं जाके माही।
हिंसा द्वेष इरखा मत्सर मद स्वारथ की बातै।
कबहूँ याके निकट न आवै छल प्रपंच की धातै।
सहज सुभाविक रहनि प्रेम की प्रीतम सुख सुखकारी।
अपुनो कोटि कोटि सुख पिय के तिनकहि पर बलिहारी।
जहँ ने ज्ञान अभिमान नेम ब्रत विशय- वासना आवै।
रीझ खीज दोरु पीतम की मन आनंद बढ़ावै।
परमारथ स्वास्थ्य दोरु पीतम और जगत नहिं जाने।
हरिश्चंद्र यह प्रेम – रीति कोउ विरले ही पहिचाने।
2. स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में—
क्षात्र धर्म के नाते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।
हुआ न यह भी भाग्य अभागा
किस पर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा,
रहे स्मरण ही आते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।
3. संध्या सुन्दरी
दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या—सुन्दरी परी—सी
धीरे धीरे धीरे
तिमिराञ्चल में चञ्चलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर—मधुर हैं दोनों उसके अधर,
किन्तु गम्भीर—नहीं है उनमें हास— विलास।

हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले बालों से,
हृदय-राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक ।

4. मैं क्षितिज भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज- कण पर जल-कण हो बरसी
नवजीवन - अंकुर बन निकली !
पथ को न मलिन करता आना,
पद-चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अंत खिली

विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली !

खंड -ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए :

10× 4=40

5. भारतेंदु युगीन काव्य की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए ।
6. हरिऔध के साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए ।
7. रामनरेश त्रिपवाठी के रचना संसार पर प्रकाश डालिए ।
8. महादेवी वर्मा की कविता के अंतर्वस्तु की चर्चा कीजिए ।

खंड -ग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए :

5× 4=20

9. भारतेंदु के छंद विधान पर प्रकाश डालिए ।
10. जयशंकर प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना को स्पष्ट कीजिए ।
11. 'संध्या सुंदरी' कविता का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए ।
12. 'मौन निमंत्रण' कविता का विश्लेषण करते हुए उसके मंतव्य को स्पष्ट कीजिए ।

